Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, DEC-JAN, 2021, VOL-9/43

कार्टून(चलचित्र) एवं बाल केन्द्रित शिक्षा

हर्षवर्धन

शोध छात्र, शिक्षा विभाग (शिक्षा विद्यापीठ), महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, Email-harsh20692@gmail.com

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र समीक्षात्मक शोध साहित्य पर आधारित है जिसका उद्देश्य अधिगम, संस्कृति, पर्यावरण एवं जल संरक्षण के प्रति जागरुकता में कार्टून(चलचित्र) की भूमिका को जानना है। निष्कर्ष में यह पता चला कि शिक्षा प्रक्रिया में कार्टून(चलचित्र) का प्रयोग अधिगम प्रक्रिया को सरलता प्रदान करता है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। अतः कहा जा सकता है कि कार्टून(चलचित्र) शिक्षा प्रदान करने का सरलतम माध्यम है। इसके द्वारा विद्यार्थियों को विषयवस्तु सरलता से समझाया जा सकता है। जबकि प्रत्येक पाठ्य-सामाग्री के लिए कार्टून(चलचित्र) निर्माण करना अवश्य ही कठिन एवं समय साध्य कार्य है लेकिन शिक्षक के प्रयास से यह कार्य सम्भव हो सकता है।

मुख्य बिन्दु- *कार्टून(चलचित्र),बाल केन्द्रित शिक्षा, अधिगम प्रक्रिया*

Scholarly Research Journal's *is licensed Based on a work at* www.srjis.com

प्रस्तावना

शिक्षा एक समुद्र की भाँति हैं, जिसमें ज्ञान, उचित आचरण, तकनीकी दक्षता और विद्या प्राप्ति आदि समाविष्ट हैं। इस प्रकार यह कौशलों, व्यापारों या व्यवसायों एवं मानसिक, नैतिक और सौंदर्यविषयक के उत्कर्ष पर केन्द्रित है। शिक्षा के माध्यम से एक पीढ़ी द्वारा निर्मित ज्ञान को दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित किया जाता है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखती है**(लाल,एन.डी.)**। विद्यार्थी शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों, व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है। विद्यार्थी समाज से तभी जुड़ पाता है जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है। शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा व्यक्तित्व का विकास करने वाली प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज का सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है**(मिश्रा, 2013)**। व्यापक रूप में शिक्षा किसी समाज में

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

निरन्तर चलने वाली उद्देश्यपूर्ण सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, ज्ञान, कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। शिक्षा की सहायता से मानव को सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। मानव निरन्तर नए-नए अनुभव प्राप्त करता है जिससे उसका दिन-प्रतिदिन का व्यवहार प्रभावित होता है। यह सीखना-सिखाना विभिन्न समूहों, उत्सवों, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियों टेलीविजन आदि से अनौपचारिक रूप से होता है। यह सीखना-सिखाना शिक्षा के विस्तृत रूप में आते हैं**(मालवीय, 2012)**।

प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश्य केवल बालक को ज्ञान कंठस्थ कराना होता था। वह शिक्षा विद्यार्थियों के मस्तिष्क में कुछ जानकारियाँ भर देती थी**(पाण्डेय, 2013)**। लेकिन आधुनिक शिक्षा में बालक को केन्द्र में रखकर प्रत्येक कार्य–योजना बनाई जाती है। वर्तमान समय में बालक के सर्वांगींण विकास पर बल दिया जाता है। बालक के सर्वांगीण विकास में बच्चे का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, एवं संवेगात्मक विकास आदि सभी पक्ष शामिल होते हैं। अतः अध्यापकों के लिए 'शिक्षा मनोविज्ञान' को जानना अत्यंत आवश्यक हो जाता है, क्योंकि बिना मनोविज्ञान की जानकारी के अध्यापक बालक को न तो समझ पाएगा और न ही उसके विकास में योगदान दे पाएगा। इस प्रकार बाल मनोविज्ञान को समझते हुए बालकों के लिए शिक्षा की व्यवस्था करने की आधुनिक व्यवस्था को बाल केंद्रित शिक्षा कहा जाता है**(गुप्ता, 2017)**। आधुनिक शिक्षा पद्धति बाल केंद्रित है। आज यदि हम निजी विद्यालय की बात करें तो पाते हैं कि विद्यार्थियों के अनुसार शिक्षकों की नियुक्त किया जाता है अर्थात् जो अध्यापक विद्यार्थियों को उचित पद्धतियों का प्रयोग करके शिक्षा प्रदान करता है बालक उन्हीं अध्यापको को पसंद करते हैं। इस व्यवस्था में प्रत्येक विद्यार्थी पर ध्यान देने का प्रयास किया जाता है। पिछड़े और मंद बुद्धि वाले बालकों को सिखाने के लिए अलग-अलग पाठ्यक्रम की व्यवस्था की गई है। व्यवहारिक मनोविज्ञान में विद्यार्थियों की परस्पर भिन्नताओं पर प्रकाश डाला गया है, जिससे यह संभव हो पाया है कि शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी की विशेषताओं पर ध्यान दें व शिक्षा प्रदान करने के लिए उचित प्रयास करें**(राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005)(मलु एवं मैकनेल, 2017)**।

वर्तमान शिक्षकों को केवल शिक्षा पद्धति के बारे में ही नहीं बल्कि विद्यार्थियों के बारे में भी जानना होता है क्योंकि आधुनिक शिक्षा, विषय प्रधान या अध्यापक प्रधान न होकर बाल प्रधान अथवा बाल केंद्रित है। यहाँ

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

मुख्य विषय यह है कि बालक के व्यक्तित्व का कहां तक विकास हुआ है? इसलिए हमें शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान होना अति आवश्यक होता है**(सोनी, 2015)**।

बाल केन्द्रित शिक्षा की विशेषताएँ

1. बाल केन्द्रित शिक्षा का केंद्र बिंदु बालक होता है ।
2. इसके अंतर्गत विद्यार्थियों की रुचियों, क्षमताओं तथा प्रवृत्तियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा प्रदान की जाती है।
3. वर्तमान में सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया जाता है, जिसके लिए मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
4. विद्यार्थियों के मन की स्थिति को समझते हुए उनके लिए शिक्षा की व्यवस्था करना ही बाल केन्द्रित शिक्षा कहलाती है।
5. बाल केन्द्रित शिक्षा में बालक पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया जाता है इसलिए पिछड़े, मंद बुद्धि तथा प्रतिभाशाली बालकों के लिए शिक्षा का विशेष पाठ्यक्रम तैयार करने का प्रयास किया जाता है**(मालवीय, 2018)**।
6. शिक्षक को केवल शिक्षा पद्धति के बारे में ही नहीं, बल्कि शिक्षार्थी के बारे में भी जानना आवश्यक होता है।
7. शिक्षण से ही शिक्षक की समस्या का समाधान नहीं हो जाता है, उसके द्वारा बालकों के ज्ञान एवं विकास का मूल्यांकन भी करना आवश्यक होता है**(राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005)**।

कार्टून(चलचित्र) का अर्थ है कोई भी हास्य या मनोरंजक चलचित्र। कार्टून(चलचित्र) फ़िल्म एक चलचित्र सिनेमा या उसका हिस्सा होता है जो विभिन्न प्रकार के चलचित्रों को एक साथ फ़ोटोग्राफ़ी करके बनाया जाता है। प्रत्येक चित्र अपने पिछले वाले चित्र से थोड़ा अलग हरकत या चल-चित्रित करता है, जब उनको इसी तरह लगातार प्रोजेक्ट के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है, तो वे हमारी आँखों को चलते-फिरते नजर आते हैं। कार्टून फ़िल्में मनोरंजन का अच्छा साधन हैं(ख़ास तौर पर बच्चों के लिये)। कुछ टीवी चैनल सिर्फ़ कार्टूनों के लिये ही बने होते हैं**(विकिपीडिया) (मलु एवं मैकनेल, 2017)**।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

कार्टून(चलचित्र) का शिक्षा में योगदान

1. **अच्छी आदतें-** कार्टून(चलचित्र) के माध्यम से विद्यार्थियों को अनेक अच्छी आदतों के बारे में सिखाया जाता है, लेकिन विद्यार्थी अपने पसंदीदा कार्टून(चलचित्र) किरदारों को देख कर जल्दी सीखते हैं क्योंकि वे उनसे मानसिक रूप से जुड़े होते हैं तथा कार्टून(चलचित्र) बालकों को मानसिक रूप से बहुत ही प्रभावित करते हैं। वे उस गंभीरता से पुस्तकों का अध्ययन नहीं करते, जिस गंभीरता से अपने पसंदीदा किरदार का अनुपालन करते हैं और जल्दी सीखते हैं**(रुल एवं स्नाइडर, 2009)**।
2. **सहानुभूति -** आमतौर पर बालकों में भावनाओं का विकास करना एक बहुत ही मुश्किल प्रक्रिया है क्योंकि बालक का मन बिल्कुल साफ होता है। जिसमें किसी भी प्रकार की भावनाओं को गढ़ा जा सकता है इसलिए कहा जा सकता है कि कार्टून(चलचित्र) एक ऐसा साधन है जिससे बालकों में अनेक प्रकार की भावनाओं का विकास किया जा सकता है (उदा॰-मित्रता, सहानुभूति, दु:ख, खुशी आदि)**(बेमबेनुट्टी, 2009)**।
3. **बहु इन्द्रिय शिक्षण-** कक्षा के वातावरण में विद्यार्थी पठन-पाठन करते समय सुनता है तथा उसे ग्रहण करने का प्रयास करता है इस क्रिया में वह केवल एक इंद्रीय का ही प्रयोग करता है जिससे वह शिक्षा ग्रहण करते समय कुछ समय के लिए ही सक्रिय रहता है एवं उसके बाद निष्क्रिय हो जाता है। उसे अधिगम के समय निरंतर सक्रिय रखने के लिए कार्टून(चलचित्र) सहायक हो सकते हैं इसमें विद्यार्थी केवल सुनता ही नहीं बल्कि वह उसे देखता भी है, यही कारण है कि वह किसी भी चीज को आसानी से सीख सकता है तथा इससे शिक्षक का कार्य भी आसान हो जाता है। कार्टून(चलचित्र) के माध्यम से कम समय में अधिक जानकारी विद्यार्थी तक आसानी से पहुंचा सकते हैं**(बेमबेनुट्टी, 2009)**।
4. **व्यक्तिगत भिन्नता-** प्रत्येक विद्यार्थी आपस में भिन्न-भिन्न होते हैं, वह चाहे शारीरिक भिन्नता हो या मानसिक। इसी तरह उनकी सीखने की गति भी भिन्न-भिन्न होती है इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमता के अनुसार शिक्षण कार्य किया जाना चाहिए। कार्टून(चलचित्र) के माध्यम से किसी भी विषयवस्तु को आसानी से सिखाया जा सकता है और विद्यार्थी को पूरा मौका मिलता है कि वह अपनी क्षमता के अनुसार अधिगम कर सके**(गफूर एवं शीलना, 2013)**।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

5. **अनुकरण-** बाल्यावस्था में विद्यार्थियों का अधिगम अधिकतर अनुकरण के द्वारा होता है। विद्यार्थी घर में अपने माता-पिता का अनुकरण करते हैं। बालिका अपनी मां की तरह तथा पुत्र अपने पिता के समान बनने का प्रयास करते हैं**(पाण्डेय, 2019)**। इस तरह कार्टून(चलचित्र) के कुछ किरदार होते हैं और उनमें बालक के जो प्रिय किरदार होते हैं वे उसे अपना आदर्श मानते हैं तथा उसी किरदार की तरह बनने का प्रयास करते हैं यहां पर बालक अपने पसंदीदा किरदारों की सभी आदतों एवं सीख को ध्यान से केवल सुनता ही नहीं बल्कि अपने चरित्र में आत्मसात करने का प्रयास भी करते हैं**(मलु एवं मैकनेल, 2017)**।
6. **मनोरंजन-** कार्टून(चलचित्र) एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा विद्यार्थियों के मस्तिष्क पर पड़े रहे दबाव को कम किया जा सकता है। वर्तमान समय में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है, लेकिन इस उद्देश्य की प्राप्ति जिस माध्यम से की जा रही है उसमें इस बात पर ध्यान नहीं दिया जाता है कि बालक के मानसिक स्तर पर क्या प्रभाव पड़ता है? क्या वह पाठ्यवस्तु बालक के लिए रुचिकर है? क्या वह उस पाठ्यवस्तु को सीखने के लिए उत्साहित है? इन सभी चीजों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यवस्तु का निर्माण इस तरह किया जाए जिससे बालक सीखने में रुचि ले सके तथा उसका मनोरंजन भी हो सके**(ओरेन एवं अन्य, 2014)**।
7. **संस्कृति**- संस्कृति किसी सभ्यता की आत्मा होती है। भारतीय संस्कृति अत्यंत प्राचीन है लेकिन वर्तमान समय में भारतीय संस्कृति का लोप होता जा रहा है। इस लोप को रोकने के लिए हमें अपनी संस्कृति की ओर वापस लौटना होगा**(मिश्रा, 2013)**। इसके लिए कार्टून(चलचित्र) एक बेहतरीन माध्यम हो सकता है वर्तमान समय में विभिन्न सांस्कृतिक क्रिया-कलापों को चलचित्र के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है जिससे विद्यार्थी इसे सरलता से समझ सके तथा अपने व्यवहार में आत्मसात कर सके। इसी तरह से हम अपनी संस्कृति को आगे हस्तांतरित कर सकेंगे**(ओरेन एवं अन्य, 2014)**।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

8. **संकल्पना निर्माण(Concept Mapping)-** चलचित्र के माध्यम से विद्यार्थियों में किसी ज्ञान के प्रति संकल्पना निर्माण करने मे सहायता मिलती है तथा इसके द्वारा वे ज्ञान को सरलता से समझ सकते है एवं उस ज्ञान का अपने दैनिक जीवन में प्रयोग कर सकते है**(इंगेक, 2008)**।

इसी तरह समस्या समाधान, अपसारी चिंतन,विज्ञान शिक्षण, पर्यावरण शिक्षा, जल संरक्षण के प्रति जागरूकता के लिए भी कार्टून(चलचित्र) काफी सहायक एवं प्रभावपूर्ण है। कार्टून(चलचित्र) को केवल मनोरंजन के लिए ही नहीं बल्कि इसके माध्यम से सुशिक्षित नागरिकों का निर्माण एवं अध्ययन-अध्यापन करते समय विद्यार्थियों को पाठ्य-सामग्री के प्रति संकल्पना निर्माण(Concept Mapping) में भी सहायता मिलती है, जिससे विद्यार्थी उस पाठ्य-सामग्री को सरलता-पूर्वक सीख एवं समझ पाते हैं। स्पष्ट है कि शिक्षा प्रक्रिया में कार्टून(चलचित्र) का प्रयोग अधिगम प्रक्रिया को सरलता प्रदान करता है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। अतः कहा जा सकता है कि कार्टून(चलचित्र), शिक्षा प्रदान करने का सरलतम माध्यम है। इसके द्वारा विद्यार्थियों को किसी विषय वस्तु को सरलता से समझाया जा सकता है। प्रत्येक पाठ्य-सामग्री के लिए कार्टून(चलचित्र) का निर्माण करना अवश्य ही कठिन एवं समय साध्य कार्य है लेकिन शिक्षक के प्रयास द्वारा यह कार्य सम्भव हो सकता है **(स्मिथ एवं अन्य, 2015)(टोलेडो एवं अन्य, 2014)(रबानी एवं अन्य, 2017)**।

संदर्भ ग्रंथ

लाल, आर. एल. (एन. डी). भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ. रस्तोगी पब्लिकेशन. Pp.395-433 I
मालवीय, आर. (2012). शिक्षा के मूल सिद्धान्त. शारदा पुस्तक भवन.Pp.1-27 I
गुप्ता, एस. पी. (2017). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. शारदा पुस्तक भवन.Pp.28-39 I
मिश्रा, उ. (2013). शिक्षा का समाजशास्त्र. न्यू कैलाश प्रकाशन.प्रयागराज.Pp.1-10 I
पाण्डेय, आर. (2013). प्राचीन भारत के मनीषी. शारदा पुस्तक भवन.Pp.1-5 I
राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा. (2005). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद.Pp.15-18 I
सोनी, आर. (2015). थीम बेस्ड अर्ली चाइल्डहूड़ केयर एंड एजुकेशन प्रोग्राम. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद.Pp.251-253 I
कार्टून(चलचित्र)
https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%9F%E0%A5%82%E0%A4%A8
इंगेक, एस.के. (2008). यूस ऑफ कान्सैप्ट कार्टून्स एस एन असेसमेंट टूल इन फ़िज़िक्स एजुकेशन. यू०एस०-चाइना एजुकेशन रिवियू. 5 (11).Pp.47-54 I

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

रूल, ए. सी., एवं स्नाइडर, जे.एस. (2009). क्रेयटिंग, एवलुयटिंग एंड इम्प्रोविंग हुमोरस कार्टून्स रेलेटेड टू डिज़ाइन प्रिसिपल्स फॉर गिफेटेड एजुकेशनल प्रोग्राम्स (ED504253). एरिक.Pp.1-15 /

बेमबेनुट्टी, एच. (2009). टीचर्स' सेल्फ रेग्युलेशनः युसिंग कार्टून्स टू रिफ्लैक्ट टीचर्स क्लासरूम मैनेजमेंट स्किल्स, सेल्फ-ऐफिकैसी एंड स्टूडेंट्स' अकैडमिक डेलेय ऑफ ग्राटिफिकेशन(ED509458).एरिक.Pp.1-15 /

गफूर, के.ए., एवं शीलना, वी. (2013). रोल ऑफ कान्सैप्ट कार्टून्स इन कैमिस्ट्रि लर्निंग(ED545358).एरिक.Pp.1-9 /

ओरेन, एफ. एस., एवं मेरिक, जी. (2014). सेवेन्थ ग्रेड स्टूडेंट्स' प्रसेप्शन्स ऑफ युसिंग कान्सैप्ट कार्टून्स इन साइन्स एंड टेक्नालजी कोर्स(ED548762).एरिक.Pp.121-137 /

मलु, के.एफ., एवं मैकनेल, के. (2017). क्रिएटिंग कार्टून्सः ए लरनर-सेंटर्ड अप्रोच टु कोंपरहनदिंग कौप्रिहन्जिग टेक्स्टस (EJ1147115). एरिक.Pp.28-31 /

स्मिथ, एल. एल., क्लौसेन, सी. के., टेसके, जे. के., घायर्द, एम., ग्रे, पी., कुहन, एम. के., सुबिया, एस. ए., ब्लाइने, एम.ए., एवं रूल, ए. सी., (2015). क्रेयटिंग कार्टून्स टू प्रमोट लीडरशिपस स्किल्स एंड एक्सप्लोर लीडरशिप क्वालिटीस(ED560854).एरिक.Pp.1-10 /

टोलेडो, एम.ए., यांगको, आर.टी एवं एस्पिनोजा, ए.ए.(2014). मीडिया कार्टून्सः इफैक्टस ऑन इशू रेसोल्यूशन इन एनवायरनमेंटल एजुकेशन(EJ1060551). एरिक.Pp.19-51 /

रबानी, ए.एच.ए., एवं अमृ, ई.एच. (2017). द इफैक्ट ऑफ युसिंग कार्टून्स ऑन डेवेलपिंग ओमनी ग्रेड 4 स्टूडेंट्स अवेयरनेस्स ऑफ वॉटर इशूस एंड दीयर एट्टीटुडेस टूवर्ड्स युसिंग डैम इन टीचिंग सोशल स्टडीस(EJ1141986). एरिक.Pp.35-46 /

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language